The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Special Issue 3 | October 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

समावेशी शैक्षिक प्रौद्योगिकी के रूप में स्वयंप्रभा का हायर सेकेण्डरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

श्रीमती मंजूषा दुबे (तिवारी)

शोधार्थी, (शिक्षा), कलिंगा विश्वविद्यालय, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़, Email: mtiwari1967@gmail.com

प्रो. (डॉ.) श्रद्धा वर्मा

संकाय अध्यक्ष (शिक्षा) कलिंगा विश्वविद्यालय, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़ Email:shraddha.verma@kalingauniversity.ac.in

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17399668

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 04-09-2025

Published: 19-10-2025

Keywords:

शैक्षणिक उपग्रह चानैल, डिजिटल प्लेटफॉर्म , शिक्षण संसाधन

ABSTRACT

प्रस्तुत अध्ययन समावेशी शैक्षणिक प्रौद्योगिकी के रूप में ष्स्वयंप्रभाष् के उपयोग का हायर सेकेण्डरी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रभाव का मलू यांकन करता है। यह शोध यह जांचन` का प्रयास करता है कि क्या स्वयंप्रभा जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को समावेशी, प्रभावी और सुलभ बनाते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र मं` डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया है। शिक्षा को सुलभ, प्रभावी और समावेशी बनाने के उद्देश्य से सरकार एवं विभिन्न संस्थाओं ने कई नवाचार किए हैं। इन्हीं प्रयासों में से एक है ष्स्वयप्रं भाष्ए भारत सरकार द्वारा संचालित 24ग7 शैक्षणिक उपग्रह चानैल, जिसका उद्देश्य दरू दराज एवं संसाधनविहीन क्षेत्रों के विद्यार्थियों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाना है। यह माध्यम राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों की सामग्री को सरल और सुलभ रूप में प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन यह जांचने का प्रयास करता है कि स्वयंप्रभा के उपयोग से हायर सेकेण्डरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में कितना सुधार आता है और क्या यह एक प्रभावी समावेशी शैक्षणिक उपकरण बन सकता है।

परिचय

शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल प्रौद्योगिकी की भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। ष्स्वयप्रं भाष् भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया एक मुक्त शैक्षणिक टीवी चौनल है जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सभी तक पहुँचाने का प्रयास करता है। यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि यह मंच हायर सेकेण्डरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों को कैसे प्रभावित करता है। साहित्य समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययनों में यह पाया गया है कि डिजिटल माध्यम, विशेष रूप से वीडियो–आधारित शिक्षण सामग्री, छात्रों की समझ और सहभागिता को बढ़ाते हैं (डपजतंए 2017य ौंतउंए 2019)। हालाँकि, स्वयंप्रभा जैसे प्लेटफॉर्म पर सीमित शोध कार्य किया गया है।

शोध साहित्य में डिजिटल शिक्षा, ई–लर्निंग और वीडियो–आधारित शिक्षण के प्रभाव पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं।

डपजतं (2017) ने यह बताया कि ऑडियो–विजुअल शिक्षण सामग्री विद्यार्थियों के सीखने की गति और समझ को बेहतर बनाती है। ौंतउं (2019) के अनुसार, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (प्ब्ज्) के समुचित उपयोग से शिक्षा की गुणवत्ता मं सुधार होता है। हालांकि, स्वयंप्रभा जैस विशिष्ट मंच पर केंद्रित शाधे अपेक्षाकृत कम हैं। जो अध्ययन हुए हैं, वे अधिकतर केवल शहरी क्षेत्रों या उच्च शिक्षा पर केंद्रित रहे हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य इस

शोध शून्यता को भरना है।

अध्ययन का औचित्य

ग्रामीण और सीमांत क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता सीमित है। ऐसे में ष्स्वयंप्रभाष् जैसे माध्यम समावेशी शिक्षा को बढ़ावा दे सकते हैं। इस शोध का उद्देश्य इसी सम्भावना का मूल्यांकन करना है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में शैक्षणिक संसाधनों की असमान पहुँच एक बड़ी चुनौती है। ग्रामीण और वंचित समुदायों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री पहुँचाने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म अहम भूमिका निभा सकते हैं। स्वयंप्रभा जैसी पहल समावेशी शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक मजबूत कदम मानी जा सकती है। यह अध्ययन इस बात का मूल्यांकन करने का प्रयास करता है कि क्या इस प्रकार की शैक्षणिक प्रौद्योगिकी हायर सेकेण्डरी स्तर पर प्रभावशाली है और क्या यह छात्रों की शैक्षणिक सफलता में योगदान कर सकती है।

शोध अंतराल

अब तक के अध्ययनों में ष्स्वयंप्रभाष् की प्रभावशीलता पर प्रत्यक्ष अध्ययन की कमी पाई गई है, विशेष रूप से हायर सेकेण्डरी छात्रों के संदर्भ में। प्रस्तुत शोध इस अंतर को भरने का प्रयास है। अध्ययन के उद्देश्य

1. स्वयंप्रभा के शैक्षिक उपयोग की प्रवृत्ति का अध्ययन

2. छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर इसके प्रभाव का विश्लेषण

3. छात्रों की सहभागिता और सीखन` में रुचि क`संदर्भ में स्वयंप्रभा की भूमिका का मूल्यांकन

शोध का उद्देश्य

यह निर्धारित करना कि स्वयंप्रभा का उपयोग हायर सेकेण्डरी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों और समावेशी शिक्षण के संदर्भ में कितना प्रभावी है।

शोध प्रश्न

1. क्या स्वयंप्रभा का उपयोग करने वाले छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में अंतर पाया जाता है?

2. क्या स्वयंप्रभा छात्रों की सहभागिता और सीखने की प्रेरणा को बढ़ाता है?

सीमाएँ

- केवल हायर सेकेण्डरी स्तर के छात्रों तक सीमित
- उत्तरदाता स्वयं–रिपोर्टिंग पद्धति पर आधारित
- केवल कुछ चयनित विद्यालयोंध्क्षेत्रों तक सीमित

शोध विधि

यह अध्ययन मात्रात्मक शोध पद्धति पर आधारित है, जिसमें सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। प्रतिभागी

राज्य के विभिन्न विद्यालयों के कक्षा 11वीं और 12वीं के कुल 200 छात्र, जो स्वयंप्रभा का उपयोग करत` हैं या उससे परिचित हैं। आंकड़ों का संग्रहण

प्रश्नावली के माध्यम से छात्रों से उनके स्वयंप्रभा उपयोग, सीखने की आदतों, और परीक्षा परिणामों की जानकारी प्राप्त की गई। सर्वेक्षण प्रश्नावली प्रश्नावली में निम्नलिखित अनुभाग सम्मिलित किए गए हैं–

- जनसांख्यिकी जानकारी
- स्वयंप्रभा उपयोग की आवृत्ति
- शैक्षणिक प्रदर्शन का विवरण

- तकनीकी पहुँच और संतोष आंकड़ों का विश्लेषण

SPSS सॉफ्टवेयर की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। वर्णनात्मक आँकड़े, सहसंबंध, और ज.जमेज का उपयोग किया गया।

सर्वेक्षण प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

उत्तरदाताओं ने बताया कि नियमित उपयोग से पाठ्यवस्तु की समझ में सुधार हुआ, और परीक्षा प्रदर्शन बेहतर हुआ। विस्तृत विश्लेषण निम्न तालिका में दर्शित किया गया है–

क्रम	विश्लेषण बिंदु	अनुक्रियाएं – आँकड़े (200 छात्र)
1	कुल प्रतिभागी	200 छात्र (कक्षा 11– 95, कक्षा 12– 105)
2	लिंग	पुरुष– 110, महिला– 88, अन्य– 2
3	क्षेत्र	ग्रामीण– 120, शहरी– 80
4	विद्यालय का प्रकार	सरकारी– 130, निजी– 70
5	इंटरनेट की उपलब्धता	हाँ– 165 (82.5:), नहीं– 35 (17.5:)
6	स्मार्ट डिवाइस की उपलब्धता	हाँ– 150, नहीं– 50
7	स्वयंप्रभा का उपयोग करन` वाले छात्र	142 (71:)
8	स्वयंप्रभा उपयोग का माध्यम	टीवी– 50, मोबाइल ऐप– 65, वेबसाइट– 27
9	उपयोग की आवृत्ति	प्रतिदिन– 35, सप्ताह में 3–4 बार– 50, कभी–कभी– 57
10	प्रतिदिन उपयोग का समय	15 मिनट– 28, 30 मिनट– 49, 1 घंटा– 42, 1 घंटे– 23
11	जिन विषयों में उपयोग हुआ	गणित– 92, विज्ञान– 78, हिंदी– 65, सामाजिक विज्ञान– 54
12	उपयोगकर्ताओं में शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार	हाँ– 118 (83:), नहीं– 24 (17:)
13	औसत परीक्षा अंक	स्वयंप्रभा उपयोगकर्ता– 74.5:, गैर–उपयोगकर्ता– 62.8:
14	तकनीकी बाधाएँ अनुभव करने वाले छात्र	91 छात्रों ने नेटवर्क/डिवाइस से जुड़ी बाधाओं की सूचना दी
15	पारिवारिक सहयोग प्राप्त करन` वाले छात्र	हाँ– 112, नहीं– 88

16	विद्यालय में स्वयंप्रभा को प्रोत्साहन मिलता है?	हाँ– 95, नहीं– 105
17	स्वयंप्रभा से आत्मविश्वास में वृद्धि	हाँ– 120, कुछ हद तक– 45, नहीं– 35
18	स्कूल गतिविधियों में सहभागिता में वृद्धि	हाँ– 107, नहीं– 93
19	छात्रों द्वारा दिए गए सुझाव	स्थानीय भाषा सामग्री, सरल इंटरफेस, अध्यापक मार्गदर्शन

सर्वेक्षण प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण का आरेखीय प्रस्तुतीकरण

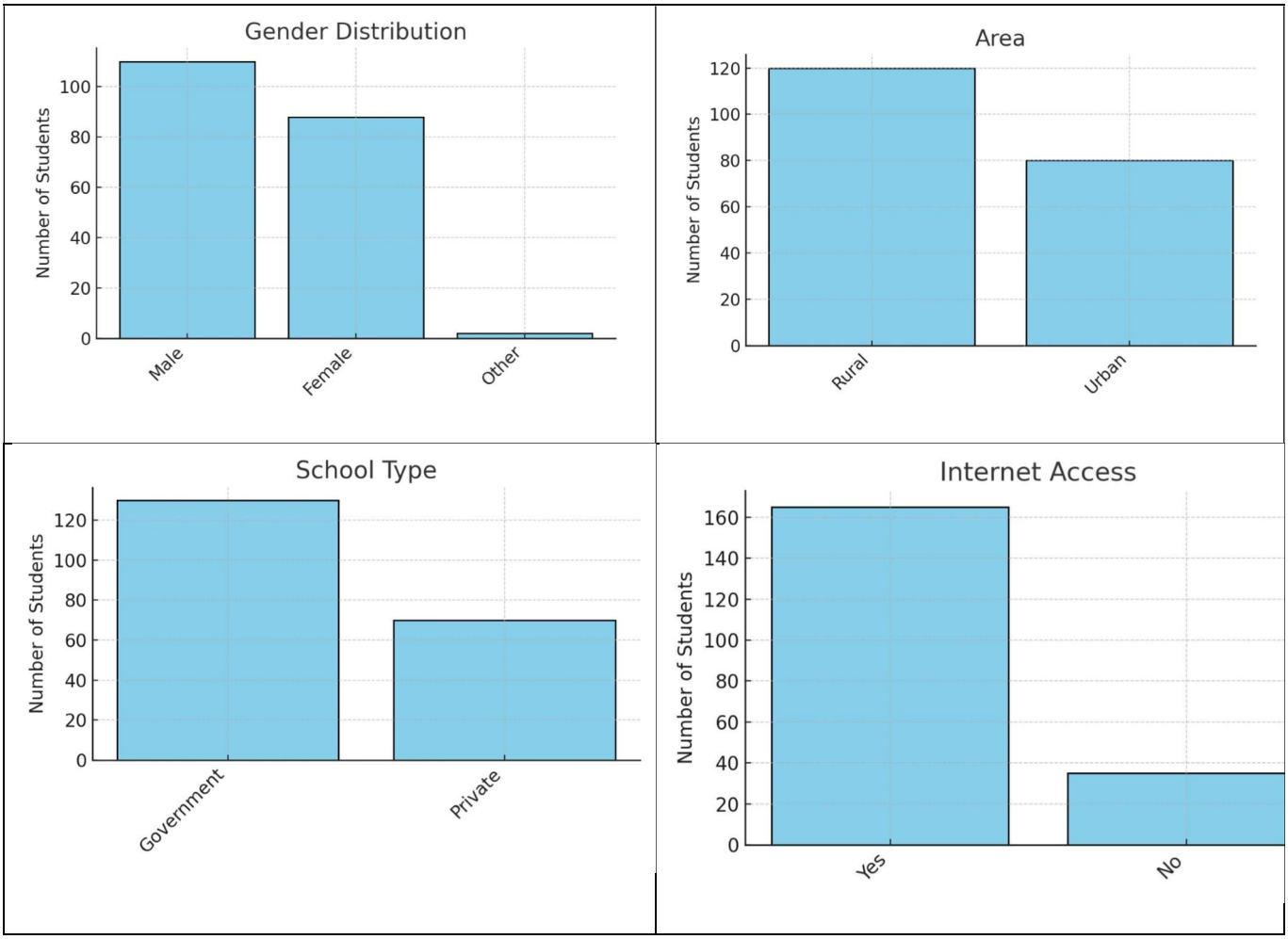

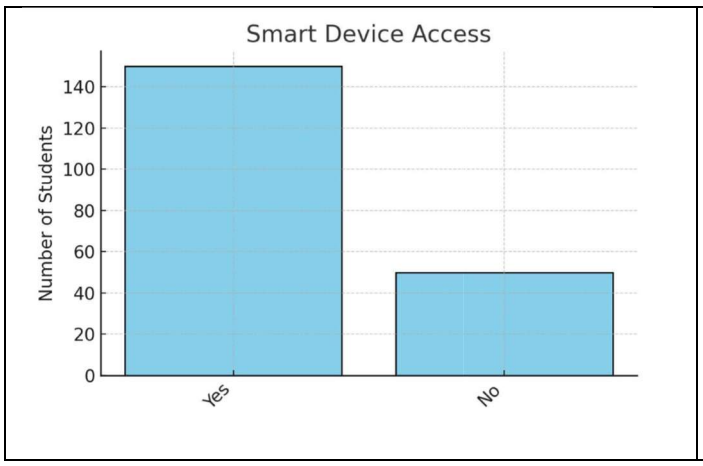
Smart Device Access
Number of Students
0
20
40
60
80
100
120
140
Yes
No

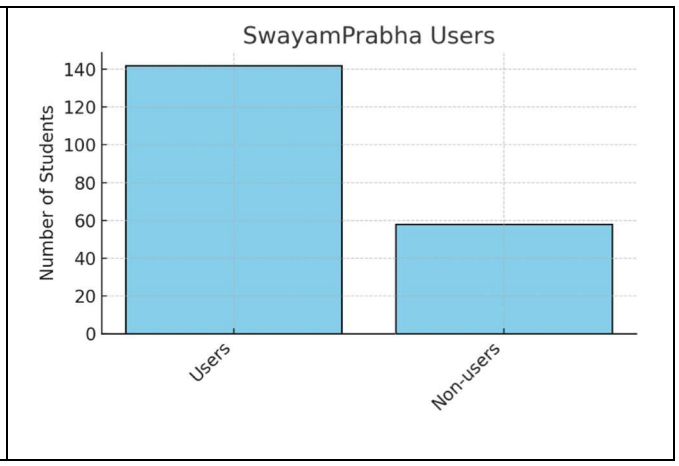
SwayamPrabha Users
Number of Students
0
20
40
60
80
100
120
140
Users
Non-users

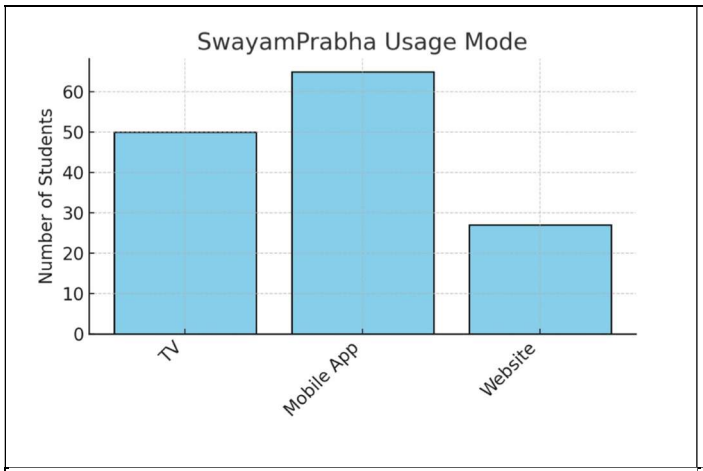
SwayamPrabha Usage Mode
Number of Students
0
10
20
30
40
50
60
TV
Mobile App
Website

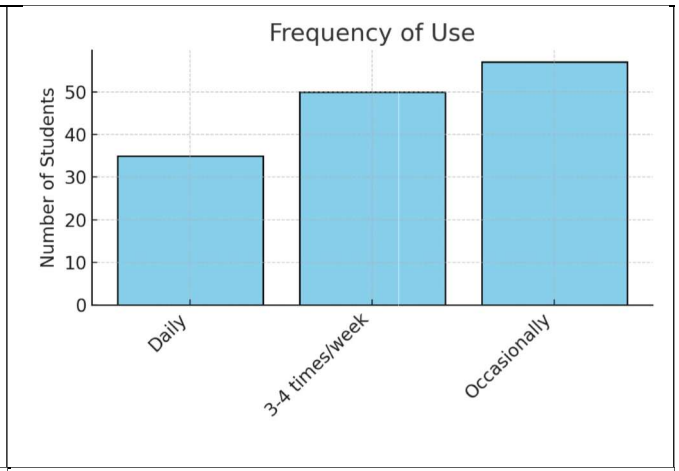
Frequency of Use
Number of Students
0
10
20
30
40
50
Daily
3-4 times/week
Occasionally

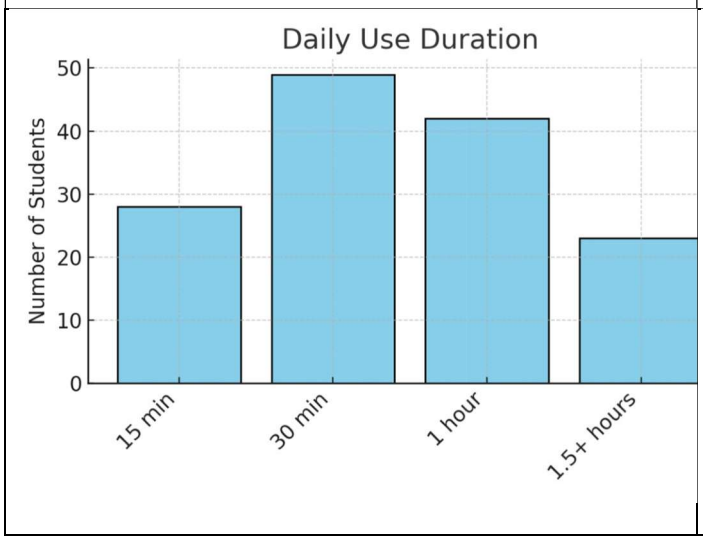
Daily Use Duration
Number of Students
0
10
20
30
40
50
15 min
30 min
1 hour
1.5+ hours

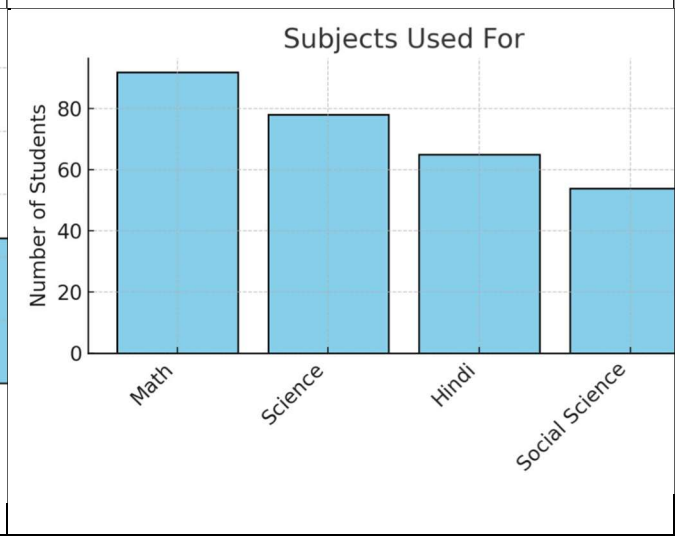
Subjects Used For
Number of Students
0
20
40
60
80
Math
Science
Hindi
Social Science

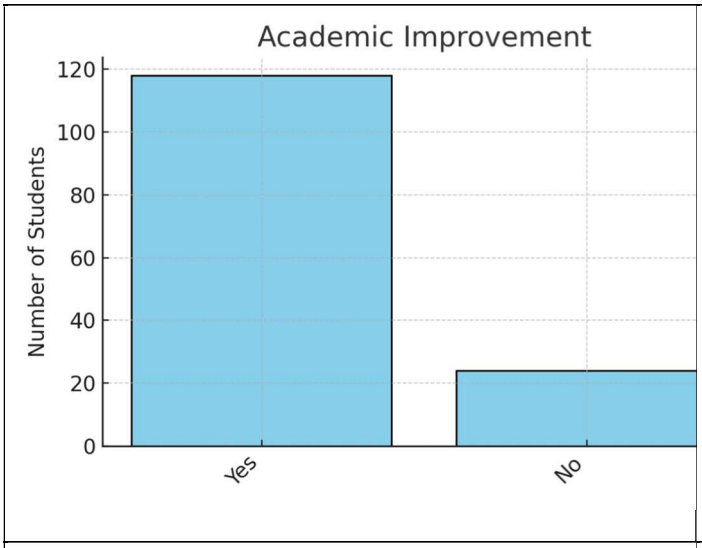
Academic Improvement
Number of Students
120
100
80
60
40
20
0
Yes
No

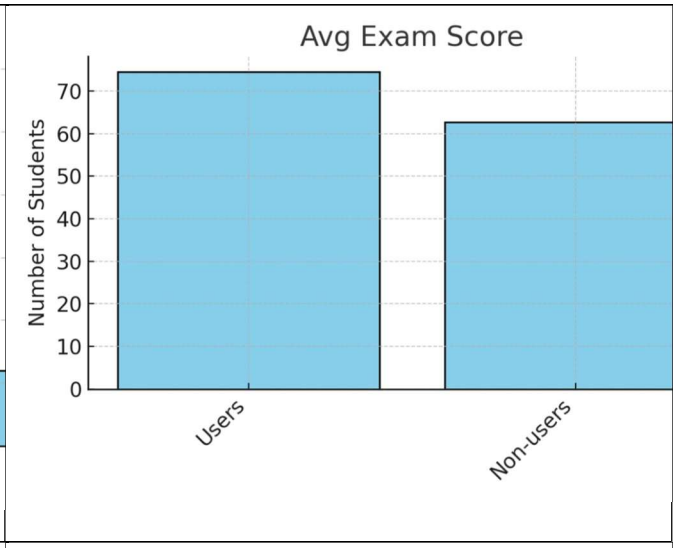
Avg Exam Score
Number of Students
70
60
50
40
30
20
10
0
Users
Non-users

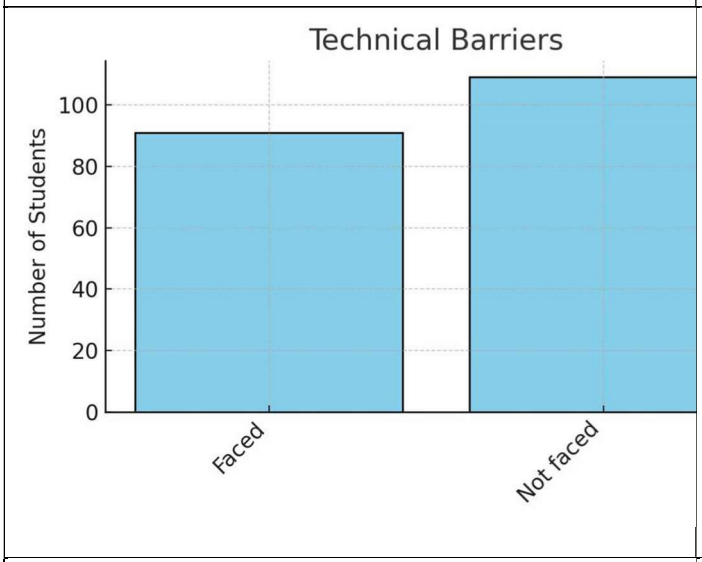
Technical Barriers
Number of Students
100
80
60
40
20
0
Faced
Not faced

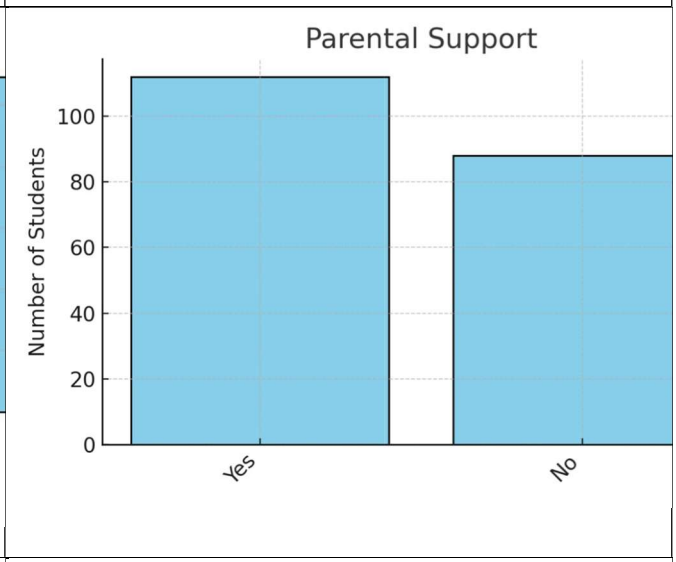
Parental Support
Number of Students
100
80
60
40
20
0
Yes
No

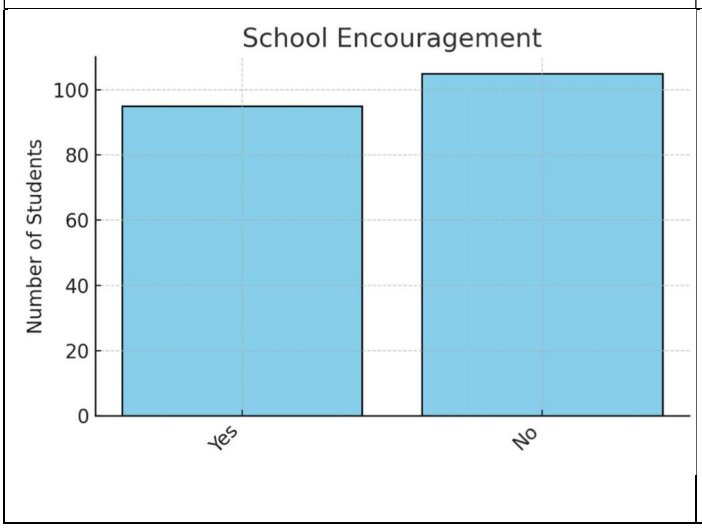
School Encouragement
Number of Students
100
80
60
40
20
0
Yes
No

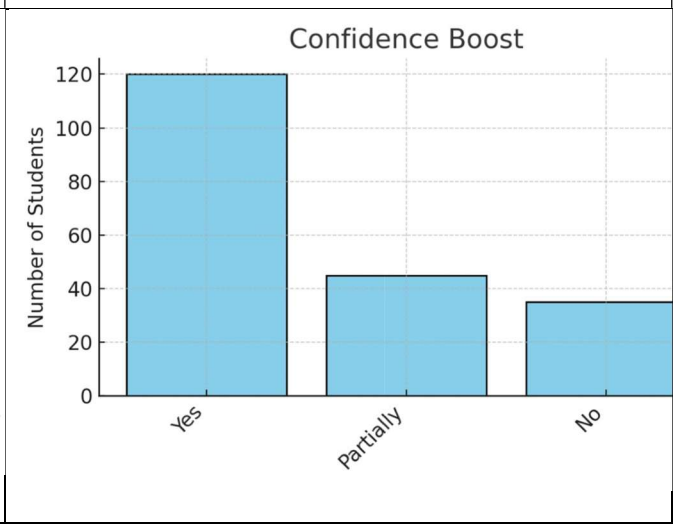
Confidence Boost
Number of Students
120
100
80
60
40
20
0
Yes
Partially
No

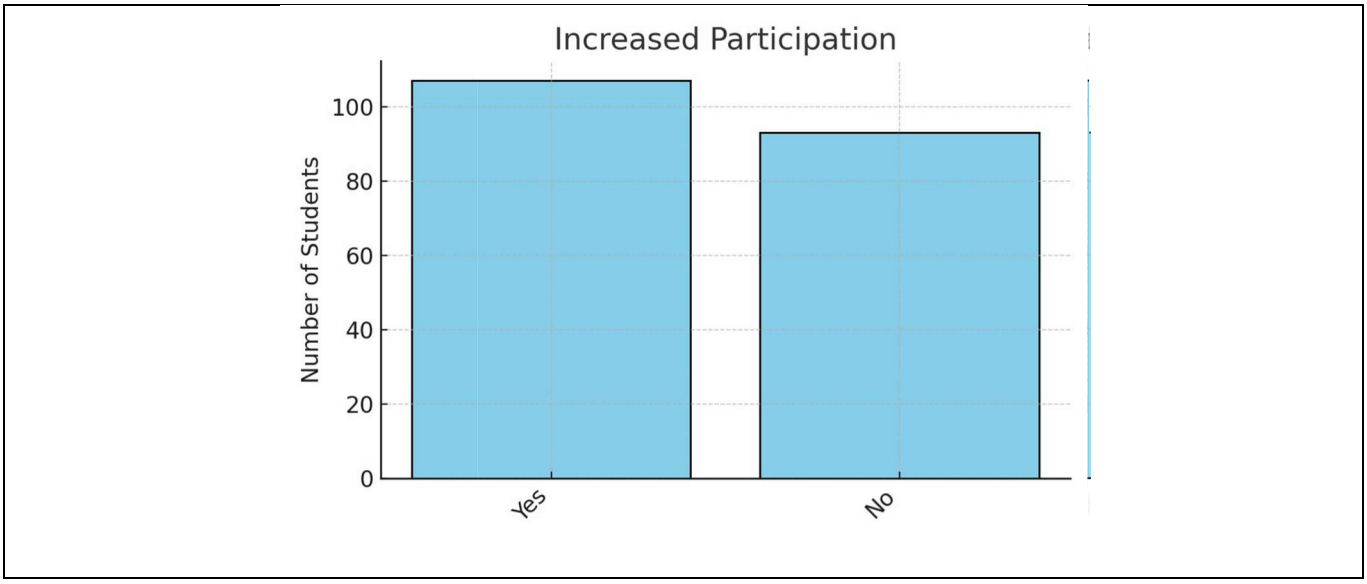

परिणामों की व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में 200 विद्यार्थियों (कक्षा 11 और 12) से प्राप्त प्रश्नावली उत्तरों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि स्वयंप्रभा के नियमित उपयोग से विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि और सक्रिय शैक्षणिक भागीदारी में सकारात्मक वृद्धि हुई है। जिन छात्रों ने स्वयंप्रभा का उपयोग किया, उनके औसतन अंक 74.5ः पाए गए, जबकि जिन्होंने इसका उपयोग नहीं किया, उनके औसतन अंक 62.8ः रहे। यह अंतर यह दर्शाता है कि शैक्षिक डिजिटल सामग्री का समावेशी उपयोग, विशेषकर ग्रामीण और सीमित संसाधन वाले छात्रों के लिए, एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हो रहा है। सर्वेक्षण में यह भी देखा गया कि उपयोगकर्ता छात्र प्रायः गणित, विज्ञान और भाषा विषयों के लिए स्वयंप्रभा का उपयोग कर रहे हैं, और अधिकांश छात्र (83ः) ने बताया कि इससे उनके परीक्षा परिणाम बेहतर हुए हैं। तकनीकी बाधाओं (नेटवर्क, डिवाइस की कमी) के बावजूद, स्वयंप्रभा का उपयोगकर्ता वर्ग अधिक आत्मविश्वासी और स्कूल की गतिविधियों में भाग लेने वाला पाया गया। चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष वर्तमान शिक्षा तंत्र में डिजिटल समावेशन की महत्ता को रेखांकित करते हैं। स्वयंप्रभा जैसे सरकारी प्लेटफॉर्म, जो निरूशुल्क और बहुभाषी हैं, विशेषकर ग्रामीण, पिछड़े और संसाधनहीन छात्रों के लिए एक सेतु का कार्य करते हैं। जहाँ अधिकांश डिजिटल प्लेटफॉर्म निजी और सशुल्क हैं, वहीं स्वयंप्रभा जैसे प्रयास शिक्षा के लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा देत` हैं। अध्ययन मे ंस्पष्ट रूप से यह उभरकर आया कि जहां शिक्षक और परिवार स्वयप्रं भा के उपयोग का`प्रोत्साहित करते हैं, वहाँ छात्र अधिक लाभान्वित होते है। हालाँकि, यह भी पाया

गया कि लगभग 45: छात्रों को तकनीकी कठिनाइयाँ (जैसे इंटरनटे की गति, उपकरण की अनुपलब्धता) का सामना करना पड़ता है, जिससे इसकी पहुँच सीमित हो सकती है। इसके समाधान हेतु सरकार और विद्यालयों को मिलकर संचार और बुनियादी ढाँच` को मजबूत करने की आवश्यकता है। निष्कर्ष

यह शोध स्पष्ट करता है कि स्वयप्रं भा एक प्रभावी समावेशी शैक्षणिक तकनीक है, जो हायर सेकेंडरी स्तर के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, आत्मविश्वास, और शैक्षणिक सक्रियता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। यह न केवल डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में समानता और पहुँच को बढ़ाता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि आर्थिक या सामाजिक बाधाएँ छात्रों की शिक्षा में अवरोध न बनें। इस अध्ययन के आधार पर यह अनुशंसा की जा सकती है कि–

- विद्यालयों में स्वयंप्रभा को पाठ्यक्रम से जोड़कर योजना बनाई जाए।
- छात्रों के लिए तकनीकी सहायता और मार्गदर्शन प्रदान किया जाए।
- ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में इंटरनेट और डिवाइस की उपलब्धता बढ़ाई जाए।
- अतः कहा जा सकता है कि यदि स्वयंप्रभा का उपयोग सुव्यवस्थित ढंग से किया जाए, तो यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप समावेशी, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में सहायक हो सकता है।

शैक्षणिक निहितार्थ

- शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में स्वयंप्रभा के एकीकरण की आवश्यकता
- ग्रामीण क्षेत्र में स्वयंप्रभा की पहुँच बढ़ाने हेतु योजनाएँ
- पाठ्यक्रम के अनुपूरक साधन के रूप में इसे व्यापक रूप से प्रचारित किया जाए

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- मित्रा, एस. (2017). शैक्षिक प्रौद्योगिकी और सीखना। नई दिल्ली: सेज प्रकाशन।
- शर्मा, आर. (2019). माध्यमिक शिक्षा में आईसीटी। दिल्ली: पीएचआई लर्निंग।
- शिक्षा मंत्रालय (2020). स्वयप्रं भा दिशानिर्देश भारत सरकार।
- यूनेस्को (2018). समावेशी शिक्षा के लिए आईसीटी। पेरिस: यनू`स्को प्रकाशन।